सहारनपुर की हवेलियां देखने के लिए मैं तीन बार आया और इन्हें मुख्य मार्ग और फिर कुदरती नदी जो अब गंदा नाला बना दिया गया है, का पुल पार करते हुए नगर के दिल कहे जाने वाली पुरानी बस्ती की तरफ कटरा में गया। ये हवेलियां भारतीय वास्तु कला के अच्छे नमूने हैं और हमारी निर्मित वास्तु-सांस्कृतिक विरासत के जीते-जागते प्रतीक। नगर के पुराने हिस्सों को ये एक सजीव चरित्र देती हैं। अब ऐसे भवनों का निर्माण नहीं होता और न ही इन्हें निर्मित किए जाने और मरम्मत के लिए पारंपरिक चूना अवलेह और मुगलिया ईंटों जैसी सामग्री आसानी से उपलब्ध होती है।

सहारनपुर की बूढ़ी हवेलियां खस्ताहाल

रणबीर सिंह
लेखक

हवेलियों के वास्तु-वैभव में संस्कृति, आर्किटेक्चरल हिस्ट्री, भू-दृश्य और अलंकरण शामिल हैं। यहां आने से पहले इस जनपद की जियोग्राफी, भू-दृश्यावली और हिमालय की निकटता और प्राकृतिक संपदा को समझना जरूरी है, तभी हवेलियों की मौजूदगी और इनसे जुड़े कृतित्व को ठीक से समझा जा सकता है।

वास्तुकला का भरपूर इस्तेमाल

हवेलियों के निर्माण में विजुएल एस्थेटिक्स का जिस प्रकार से ध्यान रखा जाता था और इसके बाहरी एवं भीतरी हिस्सों को आकर्षक और अलंकृत किया जाता था, उनके सृजन के लिए सामग्री को स्थानीय तौर से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों यथा शिवालिक पर्वतमाला, नदी तट और जंगल से लिया जाता था, जिसे मानव कौशल से संवारा जाता था। एक हवेली का मुखौटा अथवा फसाद इसका सबसे प्रमुख हिस्सा होता है, जिसका अभिकल्प मेहराबदार और छोटी-छोटी मेहराबों या बंगड़ियों अर्थात फोलियेटेड और कस्प्ड आर्क्स से किया जाता था। इसके नीचे दायां-बायां दो छोटी चौंतरियां बनाईं जाती, दोनों के बीच धरती से सटी हुई सपाट और पत्थर की पाद-शिला या दांसा लगाया जाता था, जिसकी तीन इंच मोटी सतह के सामने वाले हिस्से पर पीपल के पत्ते की कार्विंग की जाती थी, जो एक पंक्ति के रूप में दिखती थी। चौंतरी की बाहरी मुख-शिला पर एक चित्रार्ध उकेरा जाता था, जिसका विषय आम जनजीवन से लिया गया एक दृश्य, जियोमेट्रिकल प्रतीक या फूल-पत्तियां और मंगलकारी जानवर या पक्षी हो सकते थे। फसाद की रचना को कलात्मक और दीर्घजीवी बनाने के लिए वास्तुकला का भरपूर इस्तेमाल किया जाता था। घर में जो भी प्रवेश करता, उसे यह मनमोहक लगता था और सकारात्मक प्रभाव छोड़ता था। देखा गया कि जर्जर होने के बाद जब पूरी ईमारत ढहने को हो, तब भी मुखौटा डटकर खड़ा रहता था।

तत्काल संरक्षण की पहल जरूरी

इस क्षेत्र की अधिकांश हवेलियां सन् 1960 तक मौजूद रहीं, लेकिन अब कुछेक उपेक्षित है और अन्य ध्वस्त हो हैं। नगर के पुराने हिस्सों के चरित्र को बचाने के लिए इन हवेलियों के जीर्णोद्धार और संरक्षण के लिए तत्काल पहल होनी चाहिए। सहारनपुर ही क्यों, उत्तराखंड के दो-तीन जिले और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नगरों और गांवों की बिल्ट हेरिटेज अथवा भवन निर्माण विरासत के समग्र संरक्षण की जरूरत है। पहले इन सभी की सूची और जीपीएस लोकेशन की डॉक्यूमेंटेशन होनी चाहिए। थोड़ा सा ऐसा काम अखिल भारतीय संस्था इंटेक ने किया है, लेकिन यह अपर्याप्त है। स्थानीय वास्तुकला या वर्नाक्युलर आर्किटेक्चर के दृश्य तत्वों और सजावट के लिए स्थानीय आवश्यकताओं, पर्यावरण, सामाजिक परिवेश, काम-धंधा और संस्कृति हेतु एक चित्रात्मक प्रतिनिधित्व को समझना जरूरी है। अतीत का प्रतिनिधित्व करने वाली सहारनपुर की कुछ हवेलियां में क्षेत्रीय सांस्कृतिक विरासत के बतौर शीशम की लकड़ी का उपयोग दरवाजों, दरवाजों के चौखटों, खिड़कियों और ब्रैकेट आदि के कलात्मक रूप में देखा जा सकता है। सहारनपुर लकड़ी की नक्काशी के कारीगरों का शहर है। पहले सारा काम हैंड टूल्स से किया जाता था, लेकिन बिजली के उपकरण आने से इसमें तेजी बेशक है, लेकिन अनगढ़ सौंदर्य तत्वों का ह्रास हुआ है। सहारनपुर शहर की दो-तीन पुरानी हवेलियों में लकड़ी की नक्काशी से बनाए गए विशिष्ट डिजाइनों को दल्हों में अपनाया गया है। ये विशुद्ध रूप से भारतीय बटन डोर या गुजराती किवाड़ों की नकाशी जैसी नहीं हैं। छत्ता जंबुदास की विशाल हवेली, बरताला यादगार की हवेली, दीनानाथ बाजार में आत्मा राम की हवेली हिन्दुस्तानी-मुगल मिश्रित प्रभाव वाले वास्तुशिल्प और अलंकरण शैली में हैं। मुगल काल के दौरान, लकड़ी पर नक्काशी का काम सहारनपुर के इतिहास में एक नई घटना के रूप में सामने आया। अनुमान है कि यहां काम करने वाले कारीगरों के कुछ वंश मुल्तान, चिनियोट (पाकिस्तान) और कश्मीर से यहां लाकर बसाए गए थे। सहारनपुर के मुगल गवर्नरों शाह रणबीर सिंह और मुहम्मद बक्का के कार्यकाल के दौरान कुछ बेहतरीन हवेलियां बनाई गईं थी। शाह रणबीर सिंह एक समृद्ध जैन समुदाय से ताल्लुक रखते थे और उन्होंने जैन व्यापारी लोगों को सहारनपुर में अपना कारोबार स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया। जैन परिवार सहारनपुर में बस गए और उन्होंने अपनी हवेलियां और 'छत्ते' बनवाए। इस क्षेत्र की मशहूर हवेलियां जैन समुदाय द्वारा ही बनवाई गई थीं। हवेलियां में मुख भित्ति में मुख द्वार के आजू-बाजू बाहर निकले हुए गोखे अथवा गवाक्ष, बारीक जाली का काम और कस्प्ड आर्च या नोकदार मेहराब जिसे बंगड़ी कहा गया, का इस्तेमाल हवेलियों के निर्माण के समय हुआ। कुछेक मालिकों ने इन हवेलियों पर नए और कंजर्वेशन के लिहाज से असंबद्ध मटीरियल से रंग-रोगन करवाकर इनके मूल रूप को बदल दिया है। हवेलियों का बाहरी हिस्सा अब बेजान और उदास दिखने लगा है।

भित्ति चित्रकला

सहारनपुर की वास्तुकला में कुछ पहाड़ी तत्व तो हैं, लेकिन इनमे शैली ज्यादातर हिन्दुस्तानी-मुगल प्रभाव की है, जो उत्तर भारत की स्थानीय आवश्यकताओं, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और संस्कृति का एक नायाब प्रतिनिधित्व है। हिन्दू व्यापारी वर्ग जैन और अग्रवाल समुदाय की जो हवेलियां कटरा में मौजूद हैं या रहीं, उनके वास्तुशिल्प को प्रभावी अभिव्यक्ति देने के लिए को भित्ति चित्रांकन किया गया और मुखद्वार की चौखट में काष्ठ-नक्काशी वाले पल्ले लगाए गए थे, जिसमें स्थानीय मुस्लिम कारीगरों को महारत हासिल है। नगर की सर्वाधिक शानदार हवेलियों में से एक नंदा गाटे की हवेली हुआ करती, जिसे ढहा दिया गया है। भित्ति चित्र दीवार की सतह पर और धनुषाकार मेहराब की बाहरी परत पर चूने का पलस्तर करने के बाद गीली सतह पर अंकित किए जाते थे। भित्ति चित्रकला के विज्ञान और तकनीकों में हमारे चितेरे प्रवीण थे, क्योंकि इससे पहले इन्होंने औरंगजेब के शासन काल के मध्य समय में देहरादून में गुरु राम राय निर्मित झंडा साहेब के विशाल प्रवेश द्वार की सपाट सतहों पर शानदार चित्रांकन किया है। इसे संभवत: सन् 1790 के आसपास बनाया और अलंकृत किया लगता है। इस पद्धति में फ्रेस्को, सेक्को-फ्रेस्को और टेंपेरा पद्धति के चित्र हमें सहारनपुर और देहरादून के अलावा इस क्षेत्र के कुछ गांवों में कनखल तक बने हुए भवनों में देखने को मिलते थे, जिनमें से अब कुछ ही भवन बचे हैं। ये चित्र सिक्को-टेंपरा पद्धति से बनाए गए थे न कि फ्रेस्को पद्धति से, जैसा कि कुछेक अध्येताओं ने कहा है। हवेलियों के बुनियादी ढांचे और रखरखाव और संरक्षण के प्रति वर्तमान मालिकों में विशेष उत्साह नहीं है। हालांकि फोटोग्राफी करते समय मुझसे इनके मालिकों ने सद्व्यवहार किया।

जीवनशैली ने खराब की खूबसूरती

छत्ता जंबुदास में हवेलियों के सामने के हिस्से को बीड़ी, सिगरेट और पान-मसाला बेचने के स्टॉल, ठेले और खोखे लगाने के लिए इस्तेमाल करते पाए गए। हवेली के मुखावरण दीवार की बाहरी सतह पर कीलें गाड़कर बड़े होर्डिंग लगा दिए गए हैं। इन हवेलियों के सामने बिजली, टेलीफोन और इंटरनेट केबल्स के लटकते हुए तारों के जाल ने इनकी दृश्यावली को दूषित किया है। बरताला यादगार की यह खूबसूरत हवेली हमें ब्रिटिश शासन की याद दिलाती थी। यह हवेली मुगल, ब्रिटिश और भारतीय वास्तुकला के मेल का सबूत थी। इसकी दीवारों पर किए गए चित्रांकन में ब्रिटिश व्यक्तियों के चित्र और प्रवेश द्वार पर फूलों और ज्यामितीय आकृतियों के पैटर्न बने हुए थे। लोगों की जीवनशैली में आए बदलावों के साथ, इन हवेलियों का ऑर्गेनिक ढांचा खराब कर दिया है।

कार्यक्षेत्र का माहौल देखकर हुआ जिम्मेदारी का एहसास

जॉब का पहला दिन

मेरे जीवन का वह दिन आज भी ताजगी के साथ याद आता है, जब मैंने 2 सितंबर 2012 को शाहजहांपुर की तहसील तिलहर में बैंक ऑफ बड़ौदा में क्लर्क के रूप में अपनी नौकरी में पहला कदम रखा था।

सुबह से ही मन में उत्साह और हल्की-सी घबराहट का मिश्रण था। नए कपड़े पहनकर, आवश्यक दस्तावेजों को संभालते हुए जब मैं बैंक की शाखा में पहुंचा, तो वहां का वातावरण मेरे लिए बिल्कुल नया और अलग था। बैंक का विशाल हॉल, ग्राहकों की लंबी कतारें, कंप्यूटर की लगातार चलती आवाजें और कर्मचारियों की व्यस्तता यह सब देखकर मन में एक जिम्मेदारी का एहसास हुआ।

शाखा प्रबंधक ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया और अन्य कर्मचारियों से परिचय कराया। सभी ने पूर्णतः सहयोग का आश्वासन दिया, जिससे मेरा आत्मविश्वास और बढ़ा गया। मुझे पहले दिन काउंटर पर बैठाकर पासबुक अपडेट और छोटे-मोटे लेन-देन का कार्य सौंपा गया। शुरुआत में उंगलियां कीबोर्ड पर थोड़ी धीमी चल रही थीं और हर एंट्री को दो बार जांचने की आदत पड़ रही थी। एक-दो बार छोटी-सी गलती भी हुई, लेकिन वरिष्ठ सहकर्मी ने धैर्यपूर्वक समझाया। उनके सहयोग ने मुझे काम को समझने में सहज बना दिया।

ग्राहकों से संवाद करना मेरे लिए नया अनुभव था। कोई जल्दी में था, तो कोई अपनी समस्या लेकर परेशान। एक बुजुर्ग व्यक्ति जब पासबुक अपडेट कराने आए और काम होने पर मुस्कुराकर आशीर्वाद दिया, तो वह पल मेरे लिए बेहद खास बन गया। उस समय महसूस हुआ कि यह नौकरी सिर्फ लेन-देन तक सीमित नहीं है, बल्कि लोगों की सेवा और विश्वास से भी जुड़ी है। दोपहर तक काम का दबाव बढ़ गया, लेकिन धीरे-धीरे मैंने गति पकड़ ली।

पुलकित कुमार
इटावा

दिन के अंत में जब कैश मिलान सही निकला, तो मन में एक संतोष और आत्मविश्वास की भावना जागी। लगा कि मैंने अपने पहले दिन की परीक्षा सफलतापूर्वक पार कर ली। शाम को घर लौटते समय थकान जरूर थी, लेकिन उससे कहीं ज्यादा खुशी और गर्व का एहसास था। पहला दिन मेरे लिए केवल एक शुरुआत नहीं था, बल्कि जिम्मेदारी, सीख और आत्मविश्वास की नई यात्रा का आरंभ था। यह अनुभव हमेशा मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा।

मुरीद रूमी के लिए ईरान से तुर्की पहुंचे शम्स

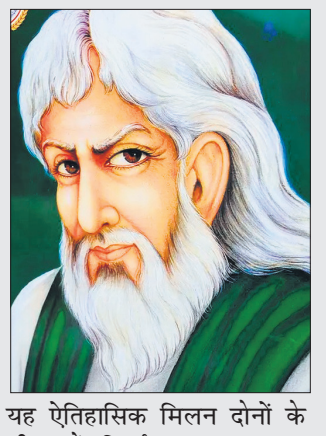

शम्स तबरेजी 13 वीं सदी के एक महान फारसी सूफी संत, दार्शनिक और कवि थे, जिन्हें प्रसिद्ध कवि जलालुद्दीन रूमी के आध्यात्मिक गुरु के रूप में जाना जाता है। मौलाना शम्स अल-दीन मुहम्मद इब्ने मलिकदादे तब्रीजी का जन्म लगभग 1184 ईस्वी में ईरान के अजरबैजान प्रांत की राजधानी तब्रीज में हुआ था।

'शम्स' अरबी शब्द है, जिसका अर्थ सूरज होता है और वे सचमुच अपने समय के आध्यात्मिक आकाश में सूर्य की भांति चमके। उनके पिता का नाम इमाम अलाउद्दीन या अली बताया जाता है, जबकि उनके दादा मलिक दाद थे। उस समय का परिवेश राजनीतिक और धार्मिक उथल-पुथल से भरा हुआ था। धर्मयुद्ध, मंगोल आक्रमण और सत्ता परिवर्तन ने पूरे क्षेत्र को प्रभावित किया था।

बाल्यावस्था में ही शम्स को शिक्षा हेतु शेख अबू बक्र-ए-सल्लह बाफ के सुपुर्द कर दिया गया। उन्होंने अपने गुरु से आध्यात्मिक साधना के अनेक आयाम सीखे, किंतु स्वयं शम्स का मानना था कि उनके भीतर कुछ ऐसा था, जिसे कोई पूरी तरह पहचान नहीं सका। ईश्वर की खोज की तीव्र लगन उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाती रही, इसी कारण वे "शैख परिंदा" अर्थात उड़ता हुआ संत कहे जाने लगे। वे साधारण जीवन जीते हुए भी गहन आध्यात्मिक ज्ञान के धनी थे। फारसी और अरबी साहित्य, सूफी दर्शन, इस्लामी कानून तथा विज्ञान में उनकी गहरी पकड़ थी।

युवावस्था में शम्स ईश्वर प्रेम में इतने डूब जाते थे कि कई-कई दिनों तक भोजन की सुध तक नहीं रहती थी। वे दरवेशों और सूफी संतों के साथ समय बिताते और परमात्मा से एक ऐसी आत्मा की प्रार्थना करते, जो उनके प्रेम और अनुभूति को समझ सके। अंततः 21 नवंबर 1244 को तुर्की के कोन्या में उनकी मुलाकात जलालुद्दीन रूमी से हुई।

करन सिंह मौर्य
बरेली

रूमी शम्स के व्यक्तित्व और उनके दिव्य प्रेम से इतने प्रभावित हुए कि वे पूरी तरह उनके समर्पित हो गए। किंतु रूमी के शिष्यों और स्थानीय विद्वानों को यह संबंध स्वीकार नहीं हुआ। ईर्ष्या और विरोध के कारण शम्स को कोन्या छोड़ना पड़ा। उनके जाने से रूमी गहरे विरह में डूब गए। बाद में जब यह ज्ञात हुआ कि शम्स दमिश्क में हैं, तो रूमी ने अपने पुत्र वलद को उन्हें वापस लाने के लिए भेजा। शम्स पुनः कोन्या लौटे, किंतु विरोध की भावना समाप्त नहीं हुई।

अंत में परिस्थितियां ऐसी बनीं कि शम्स एक बार फिर कोन्या से चले गए और फिर कभी दिखाई नहीं दिए। उनके जीवन के अंतिम चरण को लेकर अनेक कथाएं प्रचलित हैं, किंतु सत्य आज भी रहस्य बना हुआ है। शम्स का जीवन सादगी, आत्मिक खोज और ईश्वर प्रेम का प्रतीक था। वे बाहरी आडंबर से दूर, केवल आंतरिक साधना में विश्वास रखते थे। उनका संपूर्ण जीवन इस सत्य को उजागर करता है कि सच्ची आध्यात्मिकता बाहरी दिखावे में नहीं, बल्कि आत्मा की गहराइयों में बसती है।

मानवता की पुकार, युद्ध नहीं समाधान

अमृता पांडे
स्वतंत्र लेखिका, हल्द्वानी

पिछले 40 वर्षों में उसने इराक, सीरिया, लेबनान और यमन जैसे देशों के भीतर एक ऐसा गुप्त नेटवर्क खड़ा किया है, जिससे उसकी रणनीतिक गहराई का पता मिलता है। यह नेटवर्क राजधानी तेहरान से शुरू होकर भूमध्य सागर से लाल सागर तक फैला हुआ है। सीरिया की सरकार, लेबनान का हिजबुल्लाह, यमन का हूती आंदोलन और फिलिस्तीन का हमास जैसे समूह शामिल हैं, ये सभी किसी न किसी रूप में ईरान के समर्थन और संसाधनों पर निर्भर हैं और अक्सर अमेरिका और इजराइल के खिलाफ सक्रिय रहते हैं, इनका मकसद अपने क्षेत्र से अमेरिका और इजराइल के प्रभाव को खत्म करना है। ईरान इन समूहों को फंडिंग, हथियार और ट्रेनिंग देकर इतना मजबूत करता है, ताकि देश के भीतर शांति बनी रहे और संघर्ष बाहर ही बाहर चलता रहे। इस दौरान ईरान ने अपनी सैन्य और साइबर ताकत को भी लगातार बढ़ाया, पर्शियन गल्फ के पास स्थित भूमिगत मिसाइलों के बसे शहर इसका उदाहरण हैं।

मार्च 2026 तक भारतीय नया रुपया 94 से 95 प्रति डॉलर के आसपास पहुंच चुका था और यह गिरावट जारी है। भारत अपनी जरूरत का अधिकांश तेल आयात करता है और जब अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होता है, तो भारत को ज्यादा डॉलर खर्च करने पड़ते हैं, जिससे रुपए पर दबाव बढ़ता है और उसकी कीमत गिरती है। वैश्विक बाजार में उत्पन्न किसी भी अनिश्चितता का असर भारत जैसे आयात-निर्भर देशों की मुद्रा पर पड़ता है। हमारा रुपया एशिया की सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली मुद्रा बन गया है। हम तो यही चाहेंगे कि मिडिल ईस्ट जितनी जल्दी संघर्ष विराम लग जाय, हमारे लिए हितकर है। ट्रंप की हालत तो बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना जैसी है। उनके मनः स्थिति पल-पल में बदल रही है। ये दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के राष्ट्राध्यक्ष का व्यवहार तो बिल्कुल भी नहीं है। इजराइल और ईरान के बीच चल रहा तनाव अब बेहद खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है। पिछले महीने यानी मार्च में भी इजरायल ने ईरान के इसी गैस प्लांट को निशाना बनाया था, जिसके बाद ट्रंप का बयान आया था कि अब ईरान के एनर्जी इंफ्रा, खासकर साउथ पार्स प्लांट पर हमला नहीं किया जाएगा। ज्ञात हो कि साउथ पार्स ईरान का सबसे बड़ा गैस इंफ्रा है। ईरान की 70 प्रतिदिन गैस यहीं से आती है। यह ईरान के लिए सोने की खान से कम नहीं है। कह सकते हैं कि यह सीधे तौर पर ईरानी अर्थव्यवस्था पर हमला है। साउथ पार्स का इसका होर्मुज से बेहद नजदीक है, अब होर्मुज रूट पर भी संकट मडराने लगा है।

तेल गैस फैसिलिटी पर चुन-चुनकर मिसाइल दागकर हमला करना और हबशान फुजैरा पाइपलाइन में आग लगना सिर्फ यूएई के लिए ही चिंता का विषय नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया के लिए। हम एलपीजी के लिए लाइन में खड़े हैं। इस तरह के हमले हमारी भी चिंता के विषय हैं। ईरान इजराइल युद्ध ने दुनियाभर में ऊर्जा संकट पैदा कर दिया है, जहां कई देशों को एनर्जी इमरजेंसी लगानी पड़ रही है। भारत में चलने वाले ढाबे, रेस्टोरेंट बंद होने के कगार पर हैं। कुछ बंद हो चुके हैं। भारत सरकार द्वारा मुश्किल समय आने का संकेत दिया गया है। हमारे तेल भंडार पर्याप्त नहीं हैं। उड़ीसा और कर्नाटक में नए तेल भंडार बनने जा रहे हैं, जिन्हें पूरा होने में 2030 तक का समय लगेगा। हालांकि पेट्रोलियम को लेकर अभी देश में बांग्लादेश और पाकिस्तान की तरह मारामारी नहीं है। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने करीब 5 मिलियन बैरल ईरानी क्रूड खरीदा है।

रेल हमारे देश में सबसे बड़ा यातायात का साधन है और राहत की बात यह है कि हमारे पास कोयले का रिजर्व भंडार है और हाइड्रो पावर भी है, जो रेल यातायात को सुचारू रखने में मददगार साबित होंगे, लेकिन युद्ध के लंबा खींचने पर विषम स्थिति आ सकती है। युद्ध के ठेकेदारों को आम जनता की परेशानी से कोई मतलब नहीं रहता। ऋषिकेष में रहने वाले एक मित्र सपरिवार एक महीने के लिए सैन फ्रांसिस्को से भारत आए थे। जैसे ही वापस जाने का समय आया तो फ्लाइट कैंसिल होने लगीं। टिकटों के दाम बढ़ने लगे। आनन-फानन में लंबा ले-ओवर लेकर टिकट कराई ताकि समय से पहुंच कर नौकरी ज्वाइन कर सकें और आर्थिक संकट से भी बचें। एक ईरानी गीतकार अपना गिटार लेकर प्लांट के पास ही बैठ गया था। ऐसे मौके पर देश में एकता होनी बहुत जरूरी है। क्योंकि सबसे बड़ी बात यह कि कोई भी युद्ध केवल हथियारों का टकराव नहीं होता, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी लंबे समय तक गहरा प्रभाव छोड़ता है। दुनियाभर में बैठे युद्ध के ठेकेदारों को इस बात को समझना होगा।